21वीं शताब्दी के यात्रा साहित्य में चिंतन की नयी दिशाएँ (प्रथम दो दशक के संदर्भ में)

विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

की पी-एच.डी. उपाधि के लिए प्रस्तावित

शोध-प्रारूप

संकाय-मानविकी

विषय-हिन्दी

शोध निर्देशिका

डॉ० मंजरी खरे
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा

शोधार्थी

अमित कुमार
एम०ए० हिन्दी
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
जे०आर०एफ०
पैट क्रमांक- E2209001

21वीं शताब्दी के यात्रा साहित्य में चिंतन की नयी दिशाएँ
(प्रथम दो दशक के संदर्भ में)

भूमिका–

21वीं शताब्दी में कथेतर गद्य प्रचुर मात्रा में सृजित हुआ है। कथेतर से अभिप्राय है कथा से इतर। यानी ऐसा गद्य जो कथा के शर्तों पर कथा न हो, लेकिन जिसका आस्वाद कथा जैसा हो। आधुनिक कथेतर गद्य विधाओं में यात्रा वृत्तांत भी महत्वपूर्ण साहित्यिक विधा है। समय के साथ-साथ इसके स्वरूप में बदलाव होते रहे हैं। कथेतर गद्य साहित्य की वह शाखा हैं, जिसमें दर्शाए गए स्थान, व्यक्ति घटनाएँ और सन्दर्भ वास्तविक जीवनानुभव पर आधारित होते हैं। यात्रा साहित्य कथेतर साहित्य की एक रोमांचकारी विधा है।

यात्रा का मनुष्य के जीवन से गहरा संबंध है। हमारा जीवन ही एक यात्रा है। जन्म से उसकी यात्रा शुरू होती है, मध्य जीवन में जिजीविषा के लिए काफी भागदौड़ करता है, और अंत में मृत्युलोक से परलोक तक की यात्रा। यात्रा मानव जीवन की एक आवश्यकता है। मानव जाति के विकास में यात्रा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। सभ्यता के शुरूआती चरण में मनुष्य अपनी भूख प्यास मिटाने और जीवनगत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु यात्रा किया करता था, धीरे-धीरे उसकी यात्राएँ उसके जीवन का अनिवार्य हिस्सा बनती चली गयी। यात्रा साहित्य एक ऐसा दर्पण है जो लेखक की कलात्मक अनुभूतियों को संवेदना के साथ प्रस्तुत करता। जब उत्साह एवं उल्लास के भाव से यात्रा, सौन्दर्यबोध की दृष्टि से प्रकृति-परिवेश को निहारते हैं, एक जिज्ञासु की दृष्टि से समाज का अवलोकन और उसकी मुक्तभाव से अभिव्यक्ति करते हैं। उससे ही यात्रा साहित्य या यात्रा वृत्तांत का सृजन होता है। यायावरी या घुमक्कड़ी एक प्रकार का नशा है, जिसके चलते मानव अधिक समय तक टिक कर बैठ नहीं सकता।

‘किन्नर देश में’ **राहुल सांकृत्यायन** लिखते हैं- जिसने एक बार घुमक्कड़ धर्म अपना लिया, उसे फिर पेंशन कहाँ, उसे फिर विश्राम कहाँ? **अज्ञेय** जी के शब्दों में– ‘यायावर को भटकते चालीस बरस हो गए, किंतु इस बीच न तो वह अपने पैरों तले घास जमने दे सका है, न क्षितिज को कुछ निकट ला सका है। ऐसे घुमक्कड़ सृजनशीलों की कलम से यात्रा साहित्य सहज रूप में नाना रूपों में प्रवाहित होता है, जैसे हिमशिखरों से बहती नाना प्रकार की हिमधाराएँ।’ सरल शब्दों में, यात्रा वृत्तांत को यात्रा के रोचक, रोमांचक और ज्ञानवर्धक अनुभवों का सांगोपांग वर्णन कह सकते हैं। जो आपने अनुभव किया, उसको पाठकों के साथ साझा करने का उत्कट भाव, ताकि वे भी कुछ वैसा ही आनंद ले सके। इसके साथ ही कुछ ऐसी मूलभूत और नयी जानकारियाँ पा सके जो उनकी यात्रा को सरल व सुखद बना सके।

यात्रा एक स्थूल प्रक्रिया है, जिसके कई सूक्ष्म अर्थ होते हैं। यात्रा प्रत्येक के लिए अलग-अलग अनुभव है। जीवन में यात्राओं का बड़ा महत्व है। कलाप्रिय मनुष्य स्वभाव से ही यायावर रहा है। जीवन का दूसरा नाम गति है। यदि वास्तविक जीवन में यात्रा का सुयोग अधिक नहीं मिलता तो कल्पना-लोक में विचरण करने से हमें कौन रोक सकता है? यायावर मन की तो यही धारणा रही है कि देवता भी जहाँ मंदिर में रूके कि पत्थर हो गये। यात्रा करने में उसे आनंद मिलता है। **राहुल सांकृत्यायन** जी लिखते हैं- घुमक्कड़ी एक रस है, जो काव्य के रस से किसी भी तरह कम नहीं है। कठिन मार्गों को तय करने के बाद नये स्थानों में पहुँचने पर ह्रदय में जो भावोद्रेक पैदा होता है, वह एक अनुपम चीज है। उसे कविता के रस से हम तुलना कर सकते हैं, और यदि कोई ब्रह्म पर विश्वास रखता है तो उसे ‘ब्रह्म रस’ समझेगा।

यात्रा साहित्य केवल देखे गए स्थानों का कोरा विवरण नहीं है। यात्रा के दौरान देखे गए स्थानों स्थलों, भोगी हुई घटनाओं एवं उससे सम्बद्ध अनुभूतियों को जब कोई साहित्यकार अपनी

कल्पना और भावप्रवणता के साँचे में ढाल कर देश से उठाकर काल में प्रतिष्ठित कर देता है, तब यात्रा साहित्य सार्थकता को प्राप्त होता है। अनुभूतियाँ तब निजी न रह सबकी बन कला हो जाता हैं। स्थान-विशेष की सीमाओं से उपर उठकर, मुक्त भाव से सार्वकालिक हो जाती हैं। यही कारण है कि आधुनिक युग में अन्य गद्य विद्याओं की भाँति यात्रा-साहित्य भी गद्य की एक सशक्त विद्या के रूप में समाहित हैं।

साहित्य की प्रत्येक विधा का संबंध उसके रचनाकार से होता है। चाहे वह कविता हो, उपन्यास या कहानी। उसमें कृतिकार अपने अनुभवों, संवेदनाओं या विचारों को अभिव्यक्त करता है। रचनाकार की दृष्टि जितनी पैनी, उदार, भावुक तथा संवेदनशील होती है, उसका यात्रा वृत्तांत उतना ही प्रभावशाली होगा। यात्री की सौन्दर्य दृष्टि, विवेक, बुद्धि आदि यात्रा को नया अर्थ प्रदान कर देते हैं। **काका साहेब कालेलकर** लिखते हैं– ‘मैं मानता हूँ कि यात्रा का वर्णन लिखते समय अपने निरीक्षण, परीक्षण, चिंतन और तुलना सबका निचोड़ उसमें आ जाता है। यात्रा वर्णन में लेखक का जीवन और व्यक्तित्व ही स्वाभाविक ढंग से प्रतिबिम्बित होता है।’ अर्थात यात्री अपने अनुभवों को यात्रा साहित्य में प्रस्तुत करने के कारण उसका जीवन और व्यक्तित्व उसमें स्वत: ही आ जाता है।

राहुल जी ने घुमक्कड़ी को संसार का सबसे बड़ा धर्म कहा है- मेरी समझ में दुनिया की सर्वश्रेष्ठ वस्तु है घुमक्कड़ी। घुमक्कड़ी से बढ़कर व्यक्ति और समाज के लिए कोई हितकारी नहीं हो सकता। वह कहते हैं चलना मनुष्य का धर्म है, जिसने छोड़ा वह मनुष्य होने का अधिकारी नही है।

इक्कीसवीं सदी के यात्रा साहित्य में चिंतन की अनेक नई दिशाएँ उभरी हैं। यात्रा-साहित्य में आजकल सामाजिक न्याय-अन्याय और पर्यावरणीय मुद्दों आदि पर ध्यान दिया जा रहा है। यात्रा के माध्यम से लोगों को इन मुद्दों के बारे में समझाने का प्रयास किया जा रहा है। यात्रा साहित्य में

अब अधिक से अधिक विभिन्न साहित्यकारों की आवाजें शामिल हो रही हैं, जिनमें अलग-अलग सामाजिक, सांस्कृतिक और भौतिक अनुभवों का विवरण होता हैं। इंटरनेट, गुगल मैप्स, और सोशल मीडिया के साथ, यात्रा साहित्यकार अब लेखन की नई तकनीकों का उपयोग करके अपने अनुभवों को साझा करते हैं। यात्रा साहित्य अब पर्यटन उद्योग का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है, और यह लोगों को यात्रा के अनुभवों को साझा करने का एक माध्यम भी प्रदान करता है।

इक्कीसवीं सदी की प्रमुख यात्रा साहित्य में कृष्णा सोबती का 'बुद्ध का कमंडल लद्धाख' मृदुला गर्ग का यात्रा वृतांत "कुछ अटके कुछ भटके" नासिरा शर्मा द्वारा लिखा गया यात्रावृत "जहाँ फव्वारें लहू रोते हैं।" महत्वपूर्ण हैं। जिसमें इन रचनाकारों ने प्रदेश, देश एवं विदेश की लोक संस्कृतियों को स्त्री स्वभाव के अनुरूप भरपूर एवं पुरजोर तरीके से प्रस्तुत किया गया हैं। **असगर वजाहत** का यात्रा साहित्य 'पाकिस्तान का मतलब क्या' में पाकिस्तान की समाज, संस्कृति और राजनीति के विविध पहलुओं का उल्लेख किया गया है, वे पाकिस्तान के लोगों की भावनाओं, अनुभवों को भी उजागर करते हैं। इसके अलावा उनके यात्रा साहित्य में पाकिस्तान का इतिहास, राजनीतिक परिस्थितियाँ और समस्याएँ भी उल्लेखित हूई है। **मनोज सिंह** का यात्रा साहित्य 'सपनों का शहर दुबई' विविधताओं और अनोखे अनुभवों से भरा है। उनकी यह रचना दुबई के व्यवसायिकता और सांस्कृतिक विरासत को दर्शाती है।

ऋतुराज जी की 'चीन की डायरी' यात्रा वृत्तांत में परदेश में बैठे कवि को घर की याद और चीन में लगातार बदल रहा परिदृष्य का द्वंद्वात्मक वर्णन है। इसमें चीन के जीवन की आत्मीय छवियाँ हैं। ऋतुराज जी अपने प्रवाही और प्रांजल गद्य में चीन के महान साहित्य और संस्कृति की झलक देते हैं। **हरिराम मीणा** अपने यात्रा वृत्तांत 'साईवर सिटी से नंगे आदिवासी तक' में आदिवासी समुदाय की संस्कृति, परंपरा और आत्म स्थापना के मूल्यों के महत्व को उजागर करते हैं।

यात्रा साहित्य में विभिन्न संस्कृतियों का वर्णन आम बात है। संस्कृति सामाजिक सरोकारों का प्रतीक है। अत: रचनाकारों ने उसे मार्मिक ढंग से लिखा है। किसी समाज को परखने के लिए उसकी संस्कृति का अध्ययन आवश्यक है। यात्राएं संस्कृति की संवाहक मानी जाती है।

शोध की आवश्यकता और महत्व–

इस शोध प्रबंध की आवश्यकता के संदर्भ में अपने अल्प ज्ञान के दायरे में रहकर, मैं अत्यंत विनम्र भाव से कहना चाहूँगा कि मेरी जानकारी में अब तक मुझे कोई ऐसा शोध प्रबंध नहीं मिला जिसमें आज के परिपेक्ष्य में यात्रा साहित्य में चिन्तन की नई दिशाएँ को विस्तार से विवेचित किया गया हो।

यात्रा साहित्य से किसी स्थान के बारे में पाठकों की जिज्ञासा शांत होती है, उनके ज्ञान का विस्तार होता है। यात्रा साहित्य पर शोध का महत्व व्यापक है, क्योंकि यह हमें विभिन्न संस्कृतियों, भूमि-भू-प्रदेशों, लोगों की सोच और जीवन शैली को समझने में मदद करता है।

इस विषय पर शोध करना आवश्यक है, क्योंकि यह हमें विभिन्न समाजों,संस्कृतियों, और इतिहास के साथ जोड़ता है। इससे हमें नई जगहों के संदर्भ, लोककथाओं, और स्थानीय लोगों की जीवन शैली का अध्ययन करने का मौका मिलता है। यात्रा साहित्य के माध्यम से हम अपनी जागरूकता और समझ में वृद्धि कर सकते हैं, और विभिन्न समाजों के बीच संबंध और समरसता को बढ़ावा दे सकते हैं। इसके अलावा यात्रा साहित्य के माध्यम से विभिन्न युगों और संस्कृतियों की तुलनात्मक अध्ययन भी किया जा सकता है।

शोध का उद्देश्य–

1. हिंदी के कथेतर गद्य का विशेषकर यात्रा साहित्य का अध्ययन करना।
2. हिंदी कथेतर गद्य में निहित सामाजिक सरोकारों एवं मानवीय मूल्यों का मूल्यांकन विस्तृत रूप से करना, विशेषकर यात्रा साहित्य के संदर्भ में इस शोध का प्रमुख उद्देश्य है।
3. यात्रा-साहित्य के माध्यम से अलग-अलग संस्कृतियों के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
4. इक्कीसवीं सदी में लिखे गये यात्रा साहित्य का सूक्ष्म अवलोकन कर उनमें निहित सामाजिक, सांस्कृतिक तत्वों तथा परिवर्तनकारी मूल्यों की पहचान करना है।

पूर्व कृत शोध–

इक्कीसवीं सदी के यात्रा-साहित्य पर सीमित रूप से कार्य हुआ है। मैंने जो शोध का विषय चुना है वह समकालीन यात्रा-साहित्य के विभिन्न पक्षों को स्पर्श करता है।इस विषय पर अभी तक कोई कार्य नहीं हुआ है, अगर कार्य हुआ भी है, तो मैं इसे अपने नजरिये से देखना चाहूंगा। शोध-गंगा तथा विभिन्न विश्वविद्यालय की वेबसाइट और पुस्तकालय से मिली जानकारी के अनुसार यात्रा-वृतांत पर अब तक निम्नलिखित कार्य सम्पन्न हुआ है।

1. हिंदी यात्रा साहित्य के गद्य स्वरूप और मूल्यांकन (1990), छत्रपति साहु जी महाराज विश्वविद्यालय
2. हिंदी के चयनित यात्रा वृतांत का आलोचनात्मक अध्ययन (2021), गंगाधर मेहर विश्वविद्यालय
3. हिंदी का यात्रा साहित्य एवं राहुल सांकृत्यायन (1994), V.B.S पूर्वांचल विश्वविद्यालय
4. हिंदी का यात्रा वृत्तांत प्रकृति एवं प्रदेय (2013), राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय

उपर्युक्त आलोक में मेरा यह कार्य हिंदी यात्रा साहित्य में नवीन योगदान दे सकेगा।

शोध की परिकल्पना–

शोध मनुष्य के ज्ञान को दिशा प्रदान करता है। इसी आलोक में मेरे द्वारा शोध विषय 'इक्कीसवीं सदी के यात्रा- साहित्य में चिन्तन की नई दिशाएँ' के माध्यम से वर्तमान दौर में पर्यावरणीय समस्याएँ, सामाजिक असमानता का अध्ययन किया जायेगा। इक्कीसवीं सदी के यात्रा-साहित्य में आये विभिन्न संस्कृतियों का सूक्ष्मता से अवलोकन किया जायेगा। यात्रा साहित्य में निहित सामाजिक सरोकार एवं मानवीय मूल्यों का मूल्यांकन विस्तृत रूप से किया जायेगा। इक्कीसवीं सदी के प्रतिनिधि यात्रा वृत्तातों का गहनता से अध्ययन किया जायेगा।

शोध की प्रविधि–

इस अनुसंधान में शोध प्रविधि का अनुसरण करते हुए विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक, आलोचनात्मक पद्धतियों का उपयोग किया जायेगा, आवश्यकता पड़ने पर तुलनात्मक प्रविधि, आगमन-निगमन पद्धति का प्रयोग किया जायेगा। कथेतर गद्य-साहित्य में यात्रा- साहित्य के लेखकों की भूमिका का अध्ययन कर हम सैद्धांतिक, विशेष रूप से आलोचनात्मक आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत करेंगे।

शोध अध्याय का विभाजन–

प्रथम अध्याय : हिंदी यात्रा साहित्य का उद्भव और विकास

इस अध्याय में यात्रा साहित्य के उद्भव विकास और स्वरूप के बारे में विस्तार से वर्णन किया जायेगा। यात्रा साहित्य तथा उसके समांतर अन्य विधाओं के बारे में वर्णन किया जायेगा। यात्रा- साहित्य, निबंध, आत्मकथा, संस्मरण, डायरी, रिपोतार्ज के बीच संबंध का अध्ययन किया जायेगा।

द्वितीय अध्याय : हिंदी यात्रा-साहित्य के प्रमुख साहित्यकारों का संक्षिप्त परिचय

इस अध्याय में हिंदी के प्रमुख यात्रा साहित्यकारों का परिचयात्मक विवेचन किया जायेगा। इक्कीसवीं सदी के प्रमुख यात्रा वृतांतकारों के व्यक्तित्व और कृतित्व का वर्णन किया जायेगा।

तृतीय अध्याय : हिंदी के चयनित यात्रा-वृतांत: एक विश्लेषण

इस अध्याय में इक्कीसवीं सदी के चयनित प्रमुख यात्रा वृतांत का व्याख्या और विश्लेषण किया जायेगा।

1. मृदुला गर्ग- कुछ अटके कुछ भटके
2. असगर वजाहत- रास्ते के तलाश में, चलते तो अच्छा था, पाकिस्तान का मतलब क्या, अतीत का दरवाजा
3. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी- अमेरिका और यूरोप में एक भारतीय मन, अंतहीन आकाश
4. नरेश मेहता- कितना अकेला आकाश
5. मधु काँकरिया- बादलो में बारूद
6. कमलेश्वर- आँखों देखा पाकिस्तान

7. ओम थानवी- मुअनजोदरों
8. अनुराधा बेनीवाल- आजादी मेरा ब्राण्ड
9. मनोज सिंह- सपनों का शहर दुबई
10. रामजी तिवारी- लद्धाख में कोई रेंचो नहीं रहता
11. ऋतुराज- चीन की डायरी
12. नासिरा शर्मा- जहाँ फव्वारें लहु रोते हैं
13. मंगलेश डबराल- एक बार आयोवा
14. हरिराम मीणा- साइबर सिटी से नंगे आदिवासी में तक
15. कुसुम अंसल- सरे राह चलते-चलते

चतुर्थ अध्याय : इक्कीसवीं सदी के प्रमुख यात्रा साहित्य में चिन्तन की नई दिशाएं

1. यात्रा साहित्य में पर्यावरण चिन्तन
2. यात्रा साहित्य में स्त्री के विविध पक्षों पर चिन्तन
3. यात्रा साहित्य में आदिवासी समाज का जनजीवन
4. यात्रा साहित्य में अल्पसंख्यक समाज का जनजीवन

पंचम अध्याय : यात्रा साहित्य की शिल्पगत विशेषताएं

1. भाषा एवं शैलीगत विशेषता
2. वस्तु
3. व्यक्तिचित्र
4. जिज्ञासा
5. अनुभूति और कल्पना।

उपसंहार

परिशिष्ट

आधार ग्रन्थ:-

- मृदुला गर्ग- कुछ अटके कुछ भटके (2006), पेंगुइन बुक्स, दिल्ली
- असगर वजाहत- चलते तो अच्छा था, (2012), अतीत का दरवाजा, (2018), राजकमल प्रकाशन दिल्ली
- विश्वनाथ प्रसाद तिवारी- अमेरिका और यूरोप में एक भारतीय मन (2012), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- नरेश मेहता- कितना अकेला आकाश (2010), भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
- मधु काँकरिया- बादलो में बारूद, (2014), किताब घर प्रकाशन, दिल्ली
- कमलेश्वर- आँखों देखा पाकिस्तान (2006), राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
- ओम थानवी- मुअनजोदरों (2011), वाणी प्रकाशन, दिल्ली
- अनुराधा बेनीवाल- आजादी मेरा ब्राण्ड (2016), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- मनोज सिंह- सपनों का शहर दुबई (2017), किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली
- रामजी तिवारी- लद्धाख में कोई रेंचो नहीं रहता (2017), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- ऋतुराज- चीन की डायरी (2018), राजपाल प्रकाशन, नई दिल्ली
- नासिरा शर्मा- जहाँ फव्वारें लहु रोते हैं (2003), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- मंगलेश डबराल- एक बार आयोवा (2002), राधाकृष्ण पेपर बैक्स, नई दिल्ली
- हरिराम मीणा- साइबर सिटी से नंगे आदिवासी में तक (2001), शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली
- कुसुम अंसल- सरेराह चलते-चलते (2016), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- असगर वजाहत- पाकिस्तान का मतलब क्या, (2012), भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली

सहायक ग्रन्थ सूची:-

- मोहन राकेश- आखिरी चट्टान तक, प्रगति प्रकाशन, नई दिल्ली (2013)
- भारतेन्दु हरिशचन्द्र- सरयू पार की यात्रा, लखनऊ की यात्रा, (भारतेन्दु के निबंध-केसरी नारायण शुक्ल) सरस्वती मंदिर जतनबर, वाराणसी (1871)
- अज्ञेय- अरे यायावर रहेगा याद- राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली (1953)
- निर्मल वर्मा- चिड़ों पर चाँदनी- भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली (1964)
- रामवृक्ष बेनीपुरी- पैरों में पंख बाँधकर- मिडिया पब्लिशिंग हाउस (1952)
- कृष्ण दत्त पालीवाल- जापान में कुछ दिन, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली (2003)
- मनोहर श्याम जोशी- क्या हाल हैं चीन के (2006), पश्चिम जर्मनी पर उड़ती नजर (2006), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- राहुल सांकृत्यायन- घुमक्कड़ शास्त्र, (1948); मेरी तिब्बत यात्रा (1937), किन्नर देश में (1948), किताब महल प्रकाशन, ईलाहाबाद
- त्रतुराज- ‘चिनी डायरी’, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, संस्करण- 2018
- महेश कटारे- ‘देश विदेश दरवेश’, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, संस्करण- 2017
- कमलेश्वर- ‘कश्मीर रात बाद’, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण- 1997
- कमलेश्वर- ‘कितने पाकिस्तान’, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, संस्करण- 2000
- ममता कालिया- ‘भविष्य का स्त्री विमर्श’, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण- 2015
- कृष्णनाथ- ‘स्फीति में बारिश, वाग्देवी प्रकाशन, राजस्थान, संस्करण- 1982
- कृष्णनाथ- ‘लद्दाख में राग विराग’, वाग्देवी प्रकाशन, राजस्थान, संस्करण- 2000

- कृष्णनाथ- 'अरूणाचल यात्रा', वाग्देवी प्रकाशन, राजस्थान, संस्करण- 2002
- रमणिका गुप्ता- 'आदिवासी साहित्य', वाणी प्रकाशन, दिल्ली- 2008
- राकेश तिवारी- 'सफ़र एक डोंगी में डगमग', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण- 2014
- धीरेन्द्र वर्मा- 'हिन्दी साहित्य कोष', भाग-1, 2, ज्ञान मण्डल लिमिटेड, वाराणसी, तृतीय संस्करण– 1985
- रामदश मिश्र- 'तना हुआ इन्द्रधनुष', साहित्य सहकार प्रकाशन, दिल्ली, प्रकाशन वर्ष- 1990
- फूलचन्द्र मानव- 'मोहाली से मेलबर्न', भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, संस्करण- 2012
- हरिराम मीना- 'आदिवासी लोक की यात्राएँ', भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, संस्करण- 2016
- प्रताप लाल शर्मा- 'हिन्दी का आधुनिक यात्रा साहित्य', अमर प्रकाशन, मथुरा, संस्करण- 2003
- माधव हाड़ा- 'कथेतर', साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, संस्करण- 2017

शोध निर्देशिका

डॉ० मंजरी खरे
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा

शोधार्थी

अमित कुमार
एम०ए० हिन्दी
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
जे०आर०एफ०

पैट क्रमांक- E2209001

डॉ० मंजरी खरे
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा

पत्रांक : ………………………   दिनांक : ………………………

सहमति–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **अमित कुमार**, स्नातकोत्तर हिंदी-विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा को प्रस्तावित शोध-प्रारूप **“21वीं शताब्दी के यात्रा साहित्य में चिंतन की नयी दिशाएँ (प्रथम दो दशक के संदर्भ में)”** विषय पर शोध-निर्देशन देना मुझे स्वीकार है। मेरी जानकारी में इस विषय पर शोध-कार्य संपन्न नहीं हुआ है।

मैं इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ।

(मंजरी खरे)
शोध निर्देशिका

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

21वीं शताब्दी के यात्रा साहित्य में चिंतन की नयी दिशाएँ (प्रथम दो दशक के संदर्भ में)

शोध-विषय पर संक्षिप्त विवरण

कथेतर गद्य की दृष्टि से 21वीं शताब्दी का कालखंड बड़ा ही समृद्ध और विविध आयामों से समन्वित है। इन सभी कथेतर गद्य विधाओं में यात्रा साहित्य का रोमांच और भी अधिक संवेदना से अनुस्यूत है। वस्तुत: यह सत्य है कि 21वीं सदी में वैश्वीकरण के कारण सांस्कृतिक मूल्यों और संवेदना का सर्वाधिक क्षरण हुआ है। ऐसी स्थिति में यात्रा साहित्य की नैसर्गिक भाव-बोध इस दिशा में सर्वाधिक प्रभावशाली रूप में स्थापित हुआ है। ऐसे समय में प्रस्तावित शोध-विषय का समसामयिक महत्व के साथ-साथ संवेदना के स्तर पर भी यह उपयोगी और महत्वप्रद है।

शोध निर्देशिका

डॉ० मंजरी खरे
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा

शोधार्थी

अमित कुमार
एम०ए० हिन्दी
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
जे०आर०एफ०
पैट क्रमांक- E2209001